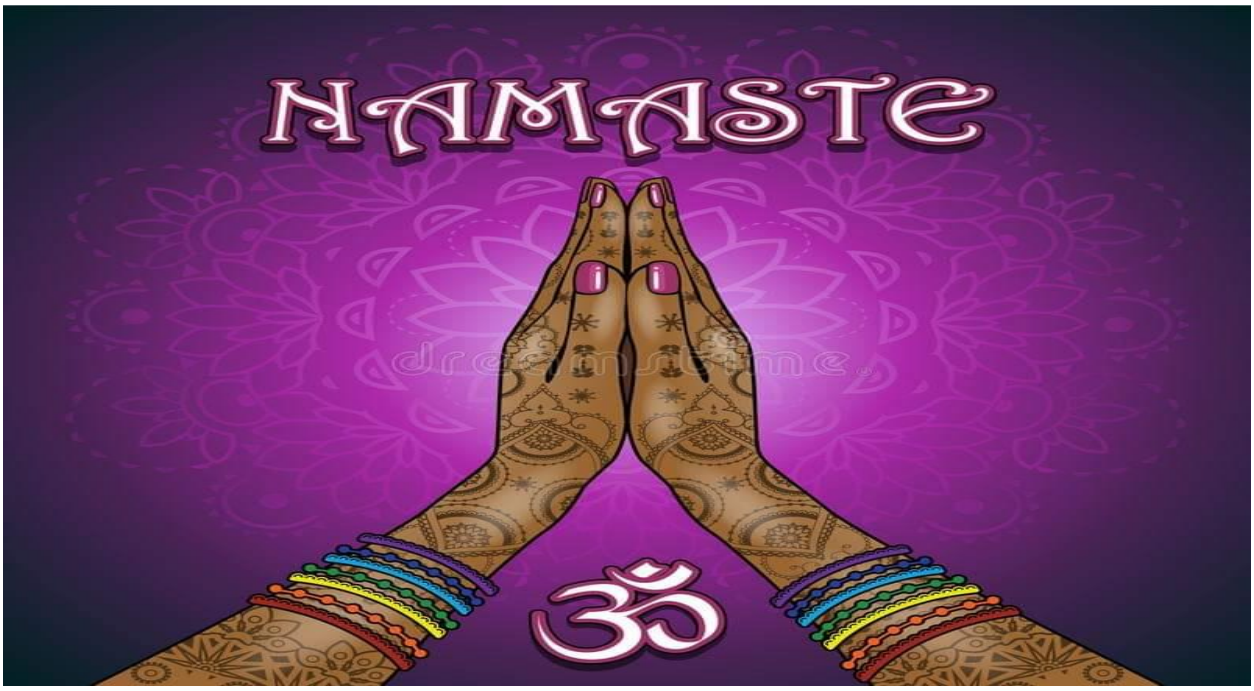

'हिंदी' शब्द की व्युत्पत्ति

हिन्दी शब्द का सम्बंध संस्कृत शब्द **सिंधु** से माना जाता है। 'सिंधु' सिंध नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस-पास की भूमि को सिन्धु कहने लगे। यह सिंधु शब्द ईरानी में जाकर 'हिंदू', हिंदी और फिर 'हिंद' हो गया। बाद में ईरानी धीरे-धीरे भारत के अधिक भागों से परिचित होते गए और इस शब्द के अर्थ में विस्तार होता गया तथा हिंद शब्द पूरे भारत का वाचक हो गया। इसी में ईरानी का ईक प्रत्यय लगने से (हिन्द+ईक) 'हिंदीक' बना जिसका अर्थ है 'हिन्द का'। यूनानी शब्द 'इन्दिका' या अंग्रेजी शब्द 'इंडिया' आदि इस 'हिंदीक' के ही विकसित रूप हैं। हिंदी भाषा के लिए इस शब्द का प्राचीनतम प्रयोग शरफुद्दीन यज्दी' के 'जफरनामा'(1424) में मिलता है।

हिन्दी का महत्व

हिन्दी का महत्ता तभी स्थापित हो गई थी जब वह स्वाधीनता संग्राम के समय समूवे देश को आपस में जोड़ने वाली सबसे सशक्त संपर्क भाषा बन गई थी । उस दौर के सभी लोगों तथा नेताओं का मानना था कि अगर कोई भारतीय भाषा देश वासियों को एकजुट करने में सहायक बन सकती है तो वह हिन्दी ही है । हिन्दी बोलचाल एवं सुविधा –जनक दैनिक प्रयोग में लाई जाने वाली भाषाओं में अव्वल मानी जाती है । फलत: हम भारतियों या हिन्दू योग्य कहलाए जाने वाले प्राणीमात्र को हिन्दी भाषा का ज्ञान होना बहुत ही अनिवार्य है । हिन्दी प्राचीन काल से चली आ रही भाषा है और जिसे हम हिन्दू लोग अपने पूर्वजों की देन मानते हैं क्योंकि,जब वे शर्त–बन्धी प्रथा हेतू मजदुरि करने आए थें ,तो अपने साथ अपनी हिन्दी भाषा,सभ्यता,संस्कृति एवं परमप्राओं को साथ लेकर आए थें । वे नहीं होते तो हमारी हिन्दी कहाँ होती । हिन्दी की ज्ञान होने से बहुत लाभ है क्योंकि, हम रामायण जैसी अपनी ग्रन्थ को पढ़ कर अर्थ सहित समझ सकते हैं तथा इसका ज्ञान औरों में भी बाँट सकते हैं । पूजा–पाठ से लेकर अन्तिम संस्कार तक हमारी हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाता है। जन्म से लेकर अन्त तक चलने वाली बोली की वस्तु है हमारी हिन्दी भाषा तो फिर क्यों इसे त्यागे हम ? हिन्दी भाषा से जुड़ी है हमारी सभी पर्व ,त्योवहार तथा ये हमारे पविारिक रिशतों को एक पक्की सूत्र में बाँध कर मज़बूत बनाती है । हिन्दू कहलाना तथा हिन्दी भाषा बोलने में हमें गर्व सा महेसुस होना चाहिए ना की शर्म आनी चाहिए । ये हमारी पहचान अथवा आत्म– गरिमा है । अंग्रेज़ी को तो पहले से ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है, परन्तु वो तो हमारी दूसरी भाषा है। भौतिकवादी बातें तथा समानों के प्रयोग से हम जितना भी बदलाओ लाने की कोशिश करेगें, इसका परिणाम हमेशा असफलता ही होगी । आव, दोनो भाषाओं को परस पर साथ –साथ लेकर चलने की कोशिश करें ताकी हमारा ज्ञान पल्लवीत हों और हम कामयाबी हासिल कर सकें । इस बात का भी ध्यान रहे कि , हम हिन्दू लोग साथ मिल कर हिन्दी भाषा का अचार –विचार करें और प्रचार एवं–प्रसार करते रहे ताकी, हिन्दी हमारी जीवित रहे और लुप्त होने से सदैव इसे बचाया जा सके । हिन्दी का नारा हम अजीवन लगाते रहें और पीढी –दर पीढी इस का गुण– गान करें ताकी इसका नीव इतना मज़बूत हो कि हमारे पूर्वजों की अस्तित्व पवित्र गंगा की तरह बहती रहे और हिन्दी के प्रति अपना प्रेम रत्न बिखेरती रहे । ऋषिकुल कॉलेज, शिक्षा मंत्रालय के साथ हो कर ये कोशिश में रहेगी कि हम अधिक से अधिक बच्चों को हिन्दी कि पढ़ाई की ओर अग्रसर करें और हिन्दी पढ़ने वाले बच्चों की भविष्य भी फीजी देश के अन्य बच्चों की तरह सफल एवं उज्जवल हो ।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।

सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार।।

शब्दार्थ –निज यानी अपनी मूल भाषा से ही उन्नति सम्भव है, क्योंकि यही सारी हमारी मूल भाषा ही सभी उन्नतियों का मूलाधार है। और मातृभाषा के ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण सम्भव नहीं है।हमे विभिन्न प्रकार की कलाएँ, असीमित शिक्षा तथा अनेक प्रकार का ज्ञान सभी देशों से जरूर लेने चाहिये, परन्तु उनका प्रचार मातृभाषा में ही करना चाहिये.हिंदी भाषा का इतना अधिक महत्व है की बिना हिंदी को इन्टरनेट से जोड़े लोगो को इन्टरनेट से नही जोड़ सकते है और जब कोई भी काम अपने भाषा में हो तो यह लोगो को जल्दी समझ में आती है इसी कारण अब इन्टरनेट की दुनिया भी हिंदी को अपनी अधिकारिक भाषा के रूप में अपना लिया है जिससे हर भारतीय अब आसानी से इन्टरनेट से जुड़ सकता है.सही अर्थो में कहा जाय तो अगर हम अपने मूलभाषा हिंदी का प्रचार प्रसार करे तो निश्चित ही विविधता वाले भारत को अपनी हिंदी भाषा के माध्यम से एकता मे जोड़ा सकता है.हिंदी के महत्व को देखते हुए प्रत्येक 14 सितम्बर को हिंदी दिवस | के रूप में मान्य जाता है हिंदी दिवस एक ऐसा अवसर होता है जिसके माध्यम से सभी भारतीयों को एकता के सूत्र में बाधा जा सकता है.तो आईये हम सब लोगो को अधिक से अधिक हिंदी भाषा के महत्व को समझाए और पूरे विश्व में हिंदी भाषा को उचित सम्मान दिलाये और खुद एक हिन्दी भाषी बने.

"ऋषिकुल रीत सदा चली आई,
सभी भाषा परे रहे जाई, हिन्दी की झंडा यहाँ सदा लहराई " ।